वेदान्त आश्रम, इन्दौर की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २२ जनवरी - २०२२ प्रकाशन - ०१

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

जनवरी २०२२

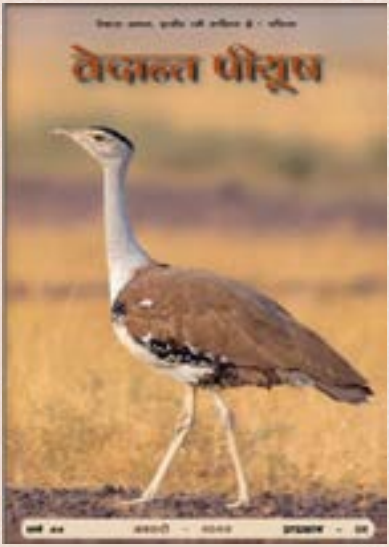

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

ॐ
सदाशिवसमारम्भाम्
शंकराचार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम्
वन्दे गुरु परम्पराम्

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	07
2.	पू. गुरुजी का संदेश	08
3.	लघु वाक्यवृत्ति	14
4.	गीता चिन्तन	24
5.	श्री लक्ष्मण चरित्र	34
6.	जीवन्मुक्त	40
7.	कथा	44
8.	मिशन-आश्रम समाचार	48
9.	इण्टरनेट समाचार	74
10	आगामी कार्यक्रम	75
11	लिन्क	70

जनवरी 2022

संसारःस्वप्नतुल्यो हि
रागद्वेषादिसंकुलः।
स्वकाले सत्यवद्भाति
प्रबोधे सत्यसद्भवेत्।।

(आत्मबोध श्लोक : 6)

राग-द्वेषादि से युक्त यह संसार स्वप्न के समान है। जब तक स्वप्नावस्था में है, तब तक ही यह सत्स्वरूप प्रतीत होता है। जिस समय व्यक्ति जग जाता है, तो वह झूठा दिखने लगता है।

पूज्य गुरुजी का सन्देश

ब्रह्म – साध्य साधन निरपेक्ष

ब्रह्म साध्य-साधन निरपेक्ष है। साध्य और साधन कर्म के अन्तर्गत की प्रस्तावना है। उसमें दो धरातल की धारणाएं द्योतित होती है। १. हम कर्ता-भोक्ता, संकुचित जीव है और २. हमसे पृथक् दृश्यजगत सत्य है, उससे हमारी संकुचिता दूर होगी। इन दो धारणाओं के साथ ही कर्म की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। हमें कर्तृत्वपूर्वक अपने प्रयास से, कर्म का आश्रय लेकर किसी साध्य को प्राप्त करना है। इस धारणा में अपने बारे में एक अभिमान भी झलकता है कि हम पहले से ही जानते है कि हमें छोटेपन से अर्थात् बन्धन से छूटकारा कैसे मिलेगा। इस प्रकार बहिर्मुखता हमें सतत बाहर के विषयों में उलजाए रखती है।

ब्रह्म – साध्य साधन निरपेक्ष

अन्तर्मुख होकर विचार के द्वार बन्ध हो जाते है। साथ ही अभिमान हमें ज्ञान की अनावश्यकता दीखाता है।

'कर्म पर अत्यधिक विश्वास झूठे ज्ञान के अभिमान का सूचक है।'

हमारा साध्य भी जगत् विषयक होने से जड़ और विकारी होता है तथा संकुचित जीव के सीमित प्रयास से प्राप्त होने से देश-काल की सीमाओं में बद्ध होता है। अतः क्षणिक तृप्ति ही प्रदान करता है। इस वजह से हम सदैव साधक बने रहते है। जब तक साध्य-साधन के खण्ड बने रहते है, तब तक संसार की अनवरत यात्रा चलती रहती है।

मुक्ति का अभिप्राय पूर्णस्वरूपता में जाग्रति है, जहां हमें कहीं जाना नहीं है या किसी भी प्रकार के परिवर्तन की अपेक्षा नहीं रह जाती

ब्रह्म – साध्य साधन निरपेक्ष

है। हम 'आत्मनि एव आत्मना तुष्ट' अर्थात् अपने आपमें, निर्निमित्त संतुष्ट है। जो तृप्ति किसी पर आश्रित है, वह नैमित्तिक होने से क्षणिक व अस्थायी होती है। जो शाश्वत व स्थायी तृप्ति है, वह शाश्वत, अखण्ड, समस्त साध्य-साधनादि के अधिष्ठानभूत ब्रह्म की प्राप्ति से ही सम्भव होती है। यह किसी देशादि में सीमित नहीं है। सर्वत्र, सर्व काल में, सब का अधिष्ठान होने से इसी समय, यहीं पर, हमारी आत्मा की तरह से विराजमान है। उसमें जाग्रति ही मुक्ति का पर्याय है।

इस जाग्रति हेतु किसी कर्मादि की अपेक्षा नहीं है। अतः पहले कर्मक्षेत्र में रहते हुए कर्म को कर्मयोग बनाकर अपने अन्दर विचारशीलता, सूक्ष्मता उत्पन्न करें। मन शुद्ध, सात्विक, विचारशील होकर तटस्थता से विचार हेतु समर्थ होता है। तब कर्म की सीमाएं, उसका दोष जानकर उससे संन्यस्त

ब्रह्म – साध्य साधन निरपेक्ष

हो सकते हैं। उसके उपरान्त अपने बारे में जो भी अस्मिता रखी है, उसे शास्त्र प्रमाण से विचार करके देखें, तब अपने बारे में धारणाएं स्पष्ट होने लगती हैं। कैसे अनात्मविषयक धारणाएं उत्पन्न करके झूठी अस्मिता बनाई है, तथा जगत, ईश्वर आदि के बारे में गलत धारणाएं विद्यमान है! उस पर गहराई से विचार करके देखने पर वह कल्पनारूपा सिद्ध हो जाती है। कल्पना को कल्पना जानना ही उसका निषेध होता है। उसका निषेध होने पर अखण्ड स्वरूप ब्रह्म का अपरोक्ष ज्ञान होता है, पूर्णस्वरूपता में जागृति हो जाती है। इस प्रकार साध्य-साधन से परे ब्रह्म में जागृति ही लक्ष्य है। उसीसे संसरण से मुक्ति होती है।

सरस्वती नमस्तुभ्यं
वरदे कामरूपिणी

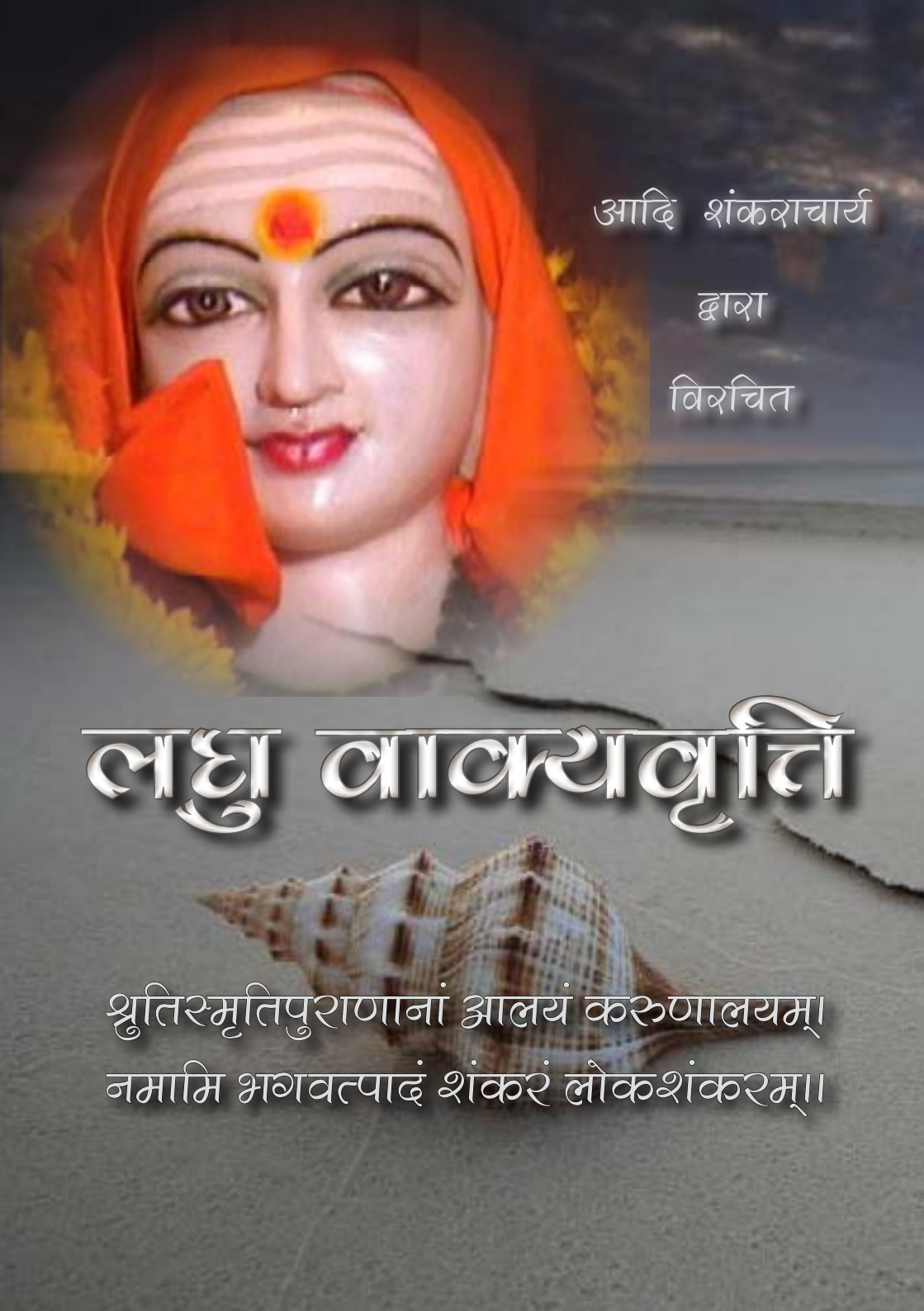

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

लघु वाक्यवृत्ति

श्रुतिस्मृतिपुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

–श्लोक : १–

स्थूलो मांसमयो देहः सूक्ष्मः स्याद्वासनामयः।
ज्ञानकर्मेन्द्रियैः सार्धं धीप्राणो तच्छरीरगौ।।

यह स्थूलशरीर मांस का बना हुआ है, तथा सूक्ष्मशरीर जो कि ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, प्राण एवं बुद्धि से युक्त है–वह वासनामय है।

लघु वाक्यवृत्ति

किसी भी यात्रा का आरम्भ वहीं से होता है, जहां हम खड़े है। अज्ञान में हर व्यक्ति जीवभाव के धरातल पर खडा है। आचार्य जीव के बारे में यहां परिचय देने हेतु, वह जिन उपाधि के धरातल पर खडा है, उसका परिचय प्रदान कर रहे हैं। जीव की उपाधि के तीन आयाम होते है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण।

<u>स्थूलो मांसमयो देहः –</u> उसमें सर्व प्रथम स्थूल धरातल जो हमारा स्थूल शरीर है। स्थूलशरीर मांसमय है। वह अन्न के विकारों से बना हुआ अन्नमय है। मनुष्य जो अन्न खाता है, उससे पहले द्रव स्वरूप एक सूक्ष्म सार बनता है – वह रस कहलाता है। उसका

स्थान हृदय कहा जाता है। यहां से वह विविध धमनियों के द्वारा सारे शरीर में फैलता है। यही रस तेज के साथ मिलकर पहले रक्त का रूप धारण करता है। उसके उपरान्त उससे अस्थि, मांस, मज्जा, मेद, और वीर्य यह शेष धातुएं बनती है। इस प्रकार यह शरीर सप्तधातु से निर्मित मांसमय है।

'जीव की तीन उपाधियां होती है - स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर।'

उसमें षड्विकार होते है। वह है - अस्ति, अर्थात् जो पहले नहीं था, व एक दिन अस्तित्व में आता है। जायते - उसका जन्म अर्थात् व्यक्त होता है। वर्धते - सतत वृद्धि को प्राप्त होता है। इसलिए उसकी शैशव के उपरान्त बाल्य, तरुण, यौवनादि अवस्थाएं होती है। विपरिणमते - उसमें सतत परिवर्तन होता है। इसलिए कभी मोटा, कभी दुबला, कमजोर, सशक्त आदि होता है। अपक्षीयते - उसमें सतत क्षय

लघु वाक्यवृत्ति

होता है। इसीलिए अवस्था परिवर्तन होता है। इसके अलावा पूरा शरीर शनैः शनैः क्षय होना आरम्भ होता है। अतः उसमें वृद्धावस्था होती है। हड्डियां गलने लगती है, बाल पकने व झड़ने लगते है, दांत टूटने लगते है। यह सब अपक्षय के लक्षण है। और अन्त में विनश्यति – एक समय यह नष्ट हो जाता है। अर्थात् उसमें जन्म से लेकर अपक्षय तक की समस्त प्रक्रियाएं समाप्त होकर, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। अन्ततः नष्ट होने पर उसका दाह किया जाता है, इसलिए उसे देह कहा। इस प्रकार यह स्थूल, मांसमय शरीर सप्त-धातु और षड्विकारों से युक्त है। यह हमारी प्रथम उपाधि – स्थूल, व्यक्त, इन्द्रियग्राह्य है।

लघु वाक्यवृत्ति

इस शरीर का अस्तित्व प्रारब्ध के रहने तक ही रहता है। प्रारब्ध समाप्त होने पर उसे आत्मवान करनेवाला जीव सूक्ष्मशरीर के साथ नीकल जाता है।

'स्थूलशरीर को आत्मवान करने वाला सूक्ष्मशरीर है।'

सूक्ष्मः स्याद् वासनामयः – स्थूलशरीर का अस्तित्व तब तक ही बना रहता है, जब तक उसके पीछे सूक्ष्मशरीर विद्यमान है। सूक्ष्म शरीर १७ अवयवों से बना हुआ है। वह है – पंच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन और बुद्धि। श्रोत्र, त्वचा, रसना, नेत्र और घ्राण ये पांच ज्ञानेन्द्रियां है; इसके माध्यम से बाहर के शब्दादि पांच विषयों को ग्रहण करते हैं। यह आकाश आदि पंचमहाभूत के प्रत्येक के सात्विक सूक्ष्म अंश से निर्मित होती है। वाक्, पाणि, पाद, जननेन्द्रिय और गुदेन्द्रिय ये पांच कर्मेन्द्रियां है, उसके माध्यम से बोलना, चलना आदि रूप बाहर के जगत

लघु वाक्यवृत्ति

में प्रतिक्रिया करते है। यह आकाश आदि पांच सूक्ष्म महाभूत के राजसी अंश से बनी हुई है। प्राण, अपान, व्यान, उदान औश्र समान यह पांच प्राण आकाश आदि पंच सूक्ष्म महाभूत के सम्मिलित रजो अंश से निर्मित होते है। उसका कार्य शरीर में सांस लेना, छोडना, भोजन पचाना, रक्त संचारण करना, और दूषित वायु को बाहर नीकालना तथा अन्त में शरीर से उत्क्रमण करना है।

सूक्ष्म शरीर के अन्तर्गत इन्द्रियां बहि:करण है तो मन, बुद्धि अन्त:करण है। अन्त:करण सूक्ष्म पंचमहाभूत के सम्मिलित सात्विक अंश से बना है। अन्त:करण के ही उसके कार्य के अनुरूप मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार रूप चार विभाग किये जाते है। उसमें संकल्प-विकल्पात्मक मन होता है। निश्चयात्मिका बुद्धि, चिन्तन करनेवाला चित्त और अहं कर्ता इति अहंकार है।

लघु वाक्यवृत्ति

हमारे अपने तथा जगत आदि विषयक निश्चय बुद्धि में होते है। उसीसे जीवन की दिशा निर्धारित होती है। जीव जो भी बाहरी जगत से ज्ञान प्राप्त करता है, विविध भोग भोगता है, उसके संस्कार अर्थात् वासना उत्पन्न होती है। इन वासनाओं का ही प्रतिबिंब अपने निश्चयों में दीखाई देता है। अन्तःकरण में ही अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश रूप पांच क्लेश होते है। तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य रूप षड्विकार होते है।

यह सूक्ष्मशरीर ही जीव समेत कर्म और वासना के अनुरूप देहान्तर वा लोकान्तर गमन करता है। यह मूलरूप से संस्कारों का बण्डल होने से उसे वासनामय कहा गया। यह शरीर अनुभव में आता है, किन्तु सूक्ष्म पंचमहाभूतों से निर्मित होने से इन्द्रियग्राह्य नहीं होता है, इसीलिए उसे सूक्ष्म शरीर कहा गया है।

इस प्रकार जीव की यह दो उपाधियां है, जो

लघु वाक्यवृत्ति

हमारे द्वारा ग्राह्य और अनुभव में आती है। उसे ही आधार बनाकर तथा उससे तादात्मय करके सब व्यवहारादि होते है। इन उपाधियों से तादात्म्य के कारण ही हम छोटेपन से युक्त अपने आपको जन्मादिवान, विकारी, सुखी-दुःखी मानते है। तथा उन सब से मुक्ति हेतु विविध कर्मादि का आश्रय लेते हैं। परिणामस्वरूप जन्मान्तर की यात्रा चलती रहती है।

विभूति दर्शन

गीता मननम्

गीता अध्याय : 11

विश्वरूप दर्शन योग

विश्वरूप दर्शन योग

गीता के विश्वरूप दर्शन योग नामक ग्यारहवें अध्याय में ५५ श्लोक हैं। इस अध्याय में भगवान ने अर्जुन के निवेदन पर अत्यन्त रोमांचकरूप दीखाकर दिव्य अनुभूति करवाई। यद्यपि अनुभूति कभी भी मोक्षदायी नहीं होती है; किन्तु यदि मोक्ष हेतु सहायक बनती है तो कल्याणकारी है। हम अनुभवकर्ता भोग वा योग के द्वारा रोमांचक अनुभूति प्राप्त करते है। अपने अन्दर प्यासे होने से अनुभूति हेतु लालायित हैं तथा प्रयास से अनुभूति प्राप्त करके धन्य भी होते हैं। किन्तु अनुभूति सदैव क्षणिक व अस्थायी होती है। जैसे प्रत्येक अनुभूति के पूर्व प्यासे होते है, वैसे ही उसके पश्चात् उस अनुभूति के स्मृति के साथ प्यासे ही होते हैं।

विश्वरूप दर्शन योग

अतः उसकी पुनरावृत्ति की अपेक्षा होती है। अन्तहीन पुनरावृत्ति करना ही संसार है। यदि आनन्द के लिए अनुभूति पर आश्रित होते है तो अन्तहीन पराधीन ही रहेंगे व मोक्ष की असम्भावना होगी। अपने बारे में अपूर्णता की धारणा तथा दृश्यविषय में सुख की धारणा होने पर अनुभूति की लालसा होती है। प्रत्येक अनुभूति के पीछे की धारणा को देख पाना वह ज्ञान का क्षेत्र है।

अपनी धारणा की प्रामाणिकता के बारे में विचार करना आवश्यक है। हमारे छोटेपनादि के निश्चय ही जीवन का आधार बनी है। जीवन का आधार यथार्थ पर आश्रित होना चाहिए। अन्यथा अन्तहीन संसरण चलता रहेगा। इसलिए भगवान से पहले यथार्थ का ज्ञान प्रदान किया। अर्जुन खुले मन व विनम्रता से ज्ञान के लिए उपलब्ध शिष्यभाव से युक्त होने पर उसे यह

विश्वरूप दर्शन योग

दिव्य ज्ञान प्रदान किया। पूर्व अध्याय में ऐसी दृष्टि प्रदान करी कि पूरी दुनिया को दिव्यता से व्याप्त कर दिया। हम सब में सुन्दरता देख सकते हैं। भगवान ने सब को दिव्यस्वरूप देखने की साधना प्रदान की। ईश्वरीय जीवनदायिनी सत्ता की सुन्दरता व दिव्यता से युक्त सृष्टि को देखें तो चारों ओर विभूति ही विभूति का दर्शन होगा। अध्याय के अन्त में बताया कि हमारी विभूति अन्तहीन है। हम यह सम्पूर्ण जगत को अपने एक अंशमात्र में धारण किए हैं।

'सृष्टि में सर्वत्र ईश्वरीय दिव्यसत्ता का खेल चल रहा है।'

इस अध्याय के आरम्भ में अर्जुन भगवान के प्रति कृतज्ञतापूर्वक धन्यता की भावना प्रगट करता है कि; 'भगवान की विशेष अनुकम्पा से उसे इस दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। जिसके फलस्वरूप हमारा मोह काफी हद तक निवृत्त

विश्वरूप दर्शन योग

हुआ।' अब अर्जुन को इस बात का निश्चय हो गया कि ये वही साक्षात् परमात्मा है, जिसमें से यह जगत् उत्पन्न हुआ है, जिसमें स्थित है, तथा जिसमें प्रलय को प्राप्त होता है। अर्जुन भगवान के समक्ष अपनी इस भावना को प्रगट करते हुए निवेदन करता है कि, 'हे भगवन्! आप की कृपा से हमें दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ है। अब आपके विश्वरूप को हम देखना चाहते है। यदि आप उसे उचित समझें तो हमें अपनी विश्वरूपता का दर्शन कराएं।' भगवान ने अर्जुन के इस निवेदन को स्वीकार कर लिया और उसे कुछ क्षणों के लिए दिव्य दृष्टि प्रदान की, और अपने ही शरीर में पूरे ब्रह्माण्ड समेत अपने विराटरूप के दर्शन कराए। जिसमें अनेक बाहू, उदर, सिर, आदि है। वह रूप इतना तेजोमय दिख रहा था कि

विश्वरूप दर्शन योग

उसके लिए कोटि कोटि सूर्य की तेजस्वीता की उपमा भी पर्याप्त नहीं थी। अर्जुन भगवान के इस दिव्यरूप को देखकर अति प्रसन्न, स्तब्ध व रोमांचित होकर नतमस्तक हो जाता है, और भगवान् की स्तुति करते हुए कहता है कि, 'हे भगवन्! हम आप में समस्त जगत् को समाहित देख रहे हैं, तथा उसमें अनेकों देवताओं का भी दर्शन कर रहे हैं।

अब हमें यह पूर्णतया निश्चय हो गया कि आप ही अविनाशी तत्त्व हैं। आप ही आदि पुरुष, जगत् के कर्ता-धर्ता हैं। आप का न

'अनुभूति क्षणिक व अस्थायी होती है, वह कभी भी मोक्षदायी नहीं होती।'

कोई आदि है, न ही कोई अन्त।' आप में केवल देवतागण ही नहीं किन्तु अनेकों ऋषि मुनि, सिद्ध, भीष्म, द्रोण, कर्ण तथा अनेकों राजा तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों को भी देख पा

विश्वरूप दर्शन योग

रहे हैं। आपके भयानक मुख में वे तेजी से प्रवेश करते जा रहे हैं। जैसे नदी तीव्र वेग से समुद्र में प्रवेश करती है, जैसे पतंगा आग में तीव्रता से प्रवेश करता है, वैसे ही आप उसे अपने मुख में निगलते जा रहे हैं। आप का यह उग्ररूप हमने पहले कभी भी नहीं देखा है। अब इस रूप को देख कर हम भयभीत हुए जा रहे हैं। आप की इस उग्रता से समस्त जगत् भी तप्त हो रहा है। यह आप का कौन सा रूप है, हम समझ नहीं पा रहे हैं।' अर्जुन को इस प्रकार भयभीत देखकर भगवान ने कहा कि, 'हे अर्जुन! हम सब का विनाश करने वाले कालस्वरूप, सब के संहार के लिए प्रवृत्त हुए हैं। यह समस्त योद्धा के संहारक हम ही हैं।'

अर्जुन यह सुनकर अत्यन्त गद्गदित हो गया। भगवान के अद्भुतरूप और महिमा को देखकर विनम्रतापूर्वक

विश्वरूप दर्शन योग

भगवान की स्तुति करने लगा। अपने द्वारा अज्ञानवशात् किए गए शिष्टाशिष्ट व्यवहार के लिए बार बार क्षमायाचना करने लगा। इस उग्ररूप से भयभीत अर्जुन भगवान से अपने इस रूप को समेट कर सौम्य चतुर्भुज रूप धारण करने का निवेदन करने लगा। भगवान ने पुनः अपना सौम्यरूप धारण किया।

'भगवान की भगवत्ता सृष्टि, स्थिति और संहार तीनों से ज्ञात होती है।'

इस दर्शन से जीवन का यथार्थ दीखता है। सृष्टि, स्थिति व संहार इन तीनों में एक दिव्यता, भगवत्ता दीखने लगती है। यदि एक व्यक्ति होकर रागादि के वशीभूत होकर देखेंगे तो सुन्दरता के स्थान पर शोक-संतापादि को ही प्राप्त करेंगे। जगत का एक यथार्थ विकराल रूप भी है। किन्तु सब की भिन्न प्रतिक्रियाएं होती है। कोई भयभीत

विश्वरूप दर्शन योग

होकर प्रार्थना करता है, महर्षि, सिद्धगण सब के लिए स्वस्ति वाचन कर रहे है। जो यथार्थ के दृष्टा है, वे भयभीत नहीं होते है। मृत्यु जीवन का एक यथार्थ है, किन्तु अन्त नहीं है। उससे भय व्यक्तिगत दुनिया, आसक्ति पराधीनता ही दर्शाता है।

भगवान इस सत्य से अर्जुन को अवगत करा के कहते है कि अर्जुन! ये सब पहले ही मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं। अतः हे सव्यसाचिन्! तुम उठो! अपने निमित्तमात्र बनकर अपने कर्तव्य का पालन करो और यशलाभ करो।' इस रूप को पूर्व में न किसी ने देखा है, न ही वेदाध्ययन, दान, कर्म या किसी भी उग्र तप से भी देखा जा सकता है। यह अर्जुन के उपर उनकी प्रसन्नता का प्रसाद था। इस प्रकार का दर्शन करना, तथा हम में तत्त्वतः जान कर

विश्वरूप दर्शन योग

प्रवेश करना अनन्यभक्ति से ही सम्भव है। अतः 'हे अर्जुन! तुम समस्त कर्मों को मुझ परमेश्वर के प्रति समर्पित करके करो। हमारे प्रति भक्तिभाव से युक्त होकर समस्त आसक्तियों का त्याग करके करो। तो सब के प्रति निर्वैरता से युक्त तुम हम ही को प्राप्त कर जाओगे।

'निमित्तमात्र भव सव्यसाचिन्!
हे अर्जुन! तुम हमारे निमित्त बनकर
अपने कर्तव्य का निर्वाह करो।'

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री लक्ष्मण चरित्र

—१४—

बन्दउं लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता॥
रघुपति कीरति बिमल पताका। दण्ड समान भयउ जस जाका॥

श्री लक्ष्मण चरित्र

परशुरामजी न्याय और दण्ड में विश्वास रखते हैं, क्षमाशीलता पर उनकी आस्था नहीं है। उन्होनें कुछ क्षत्रियों के अपराध पर निर्मम होकर सारी क्षत्रियजाति को बार-बार दण्डित किया था। इस बातचीत में भी वे बड़े गर्व से अपने क्षत्रियकुल द्रोही होने की घोषणा करते हैं। लक्ष्मणजी के लिए 'सठ', निरंकुश', 'अबुध' जैसे न जाने कितने शब्दों का प्रयोग करते हैं, और युद्ध की चुनौति देते हैं। लक्षण शस्त्र द्वारा उत्तर देने में समर्थ थे। वे भी इसे क्षत्रिय-ब्राह्मण-संघर्ष का रूप देकर क्षत्रिय जाति के प्रतिकाररूप दे सकते थे। पर वे इतने उकसावे में भी शान्त बने रहे। उन्हें विश्वास था कि वाणी के माध्यम से ही परशुराम को

श्री लक्ष्मण चरित्र

पराजित किया जा सकता है, और वह भी उनकी दृष्टि में उनके अहं की पराजय का प्रश्न था। उन्हें पता था कि श्री राम के स्वरूप को न पहचान कर ही परशुराम इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं। भ्रान्ति का निवारण होते ही वह स्वयं कृतकृत्यता का अनुभव करेंगे और अन्त में हुआ भी यही। इस वार्तालाप का अन्त बहिरंग दृष्टि से भले ही परशुराम की पराजय के रूप में हुआ हो, पर स्वयं परशुराम को उसमें पराजय की पीड़ा की अनुभूति नहीं होती। वे कृतज्ञता का अनुभव करते हैं। उनके बुद्धि-पटल का आवरण दूर हो चुका था। तब उन्हें न केवल राघव की क्षमाशीलता का दर्शन होता है; अपितु क्षमा की आधारशिला के रूप में लक्ष्मण का भी साक्षात्कार होता है। उनकी इस अनुभूति की अभिव्यक्ति 'क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता' के रूप में हुई। परशुराम के द्वारा की जाने वाली स्तुति के पश्चात् कुटिल राजाओं की स्थिति

श्री लक्ष्मण चरित्र

की कल्पना की जा सकती है। वे अपने प्राणों को लेकर भाग खड़े हुए। इस तरह लक्ष्मण की दूरदर्शिता और नीति-चातुरी से एक महान संकट टल गया। महाराजश्री जनक ने स्वयं के द्वारा की गई लक्ष्मण की आलोचना के लिए निश्चितरूप से लज्जा का अनुभव किया। उन्हें लगा कि धनुर्भंग से पहले और बाद में लक्ष्मण की भूमिका अभूतपूर्व थी। उसके अभाव में न तो धनुर्भंग हो पाता औ न ही युद्ध का संकट टल पाता। न केवल वे ही अपितु परशुराम भी ईश्वर के स्वरूप-ज्ञान से वंचित रह जाते। इसलिए परशुराम के जाते ही वे महर्षि विश्वामित्र के चरणों में प्रणाम करते हुए जो वाक्य कहते हैं, उसमें सांकेतिक रूप में लक्ष्मण के प्रति क्षमा-याचना का स्वर सम्मिलित था। उन्हें स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि वे जिस कृतकृत्यता का अनुभव कर रहे हैं, उसका श्रेय भगवान राम के साथ लक्ष्मण हो भी है। यदि श्री राम ईश्वर हैं तो लक्ष्मण

श्री लक्ष्मण चरित्र

आचार्य के रूप में उनके स्वरूप का परिचय देने वाले हैं। राजा जनक की कृतज्ञता इन वाक्यों से फूट पड़ी; 'मोहि कृतकृत्य कीन्ह दोउ भाई। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं।।'

अयोध्या से महाराज श्रीदशरथ बारात लेकर आते हैं और विवाह सानन्द सम्पन्न होता है। महाराज श्रीजनक ने अपनी भ्रातृकन्याओं को भरत-शत्रुघ्न को अर्पित किया। उनकी स्वयं की कन्या उर्मिला से लक्ष्मणजी का पाणि ग्रहण करवाया। इस तरह महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के लिए इस यात्रा में लक्ष्मण की अनिवार्यता का बोध असंदिग्ध रूप से पग-पग पर होता है।

उपदेश सार शिविर

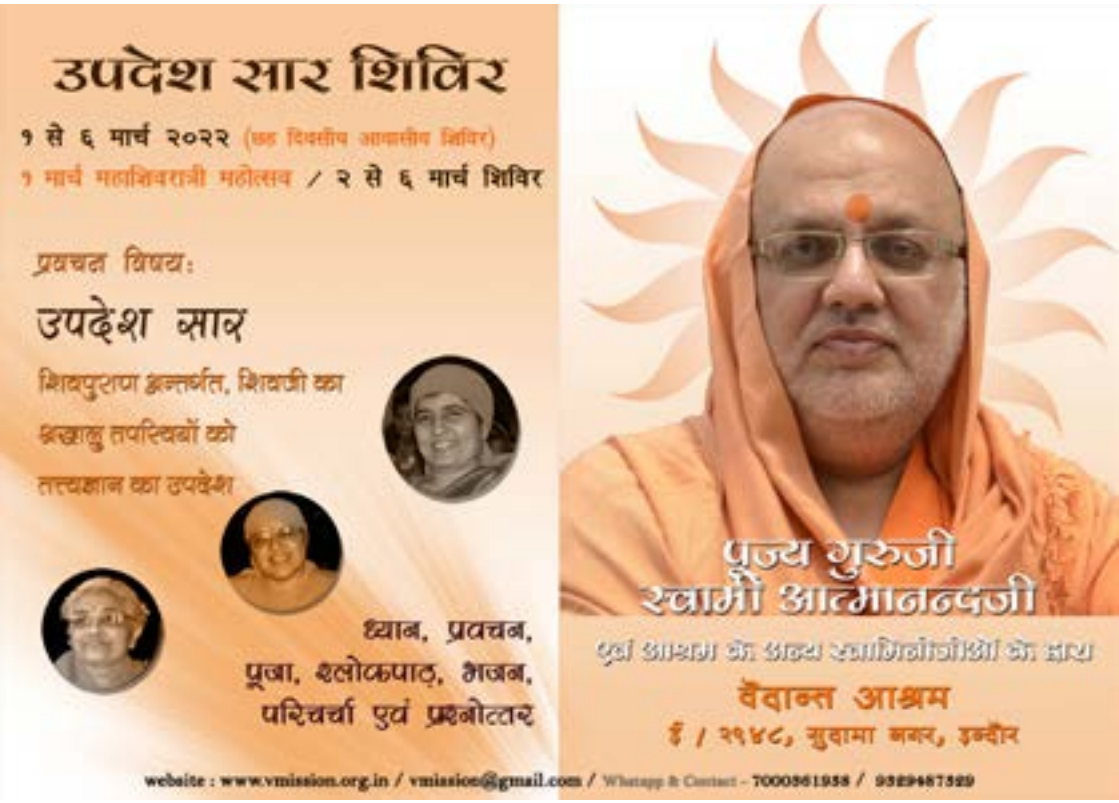

कोविड की स्थिति देखकर
कार्यक्रम में परिवर्तन हो सकता है।

जीवनमुक्त

—११—

उत्तरकाशी

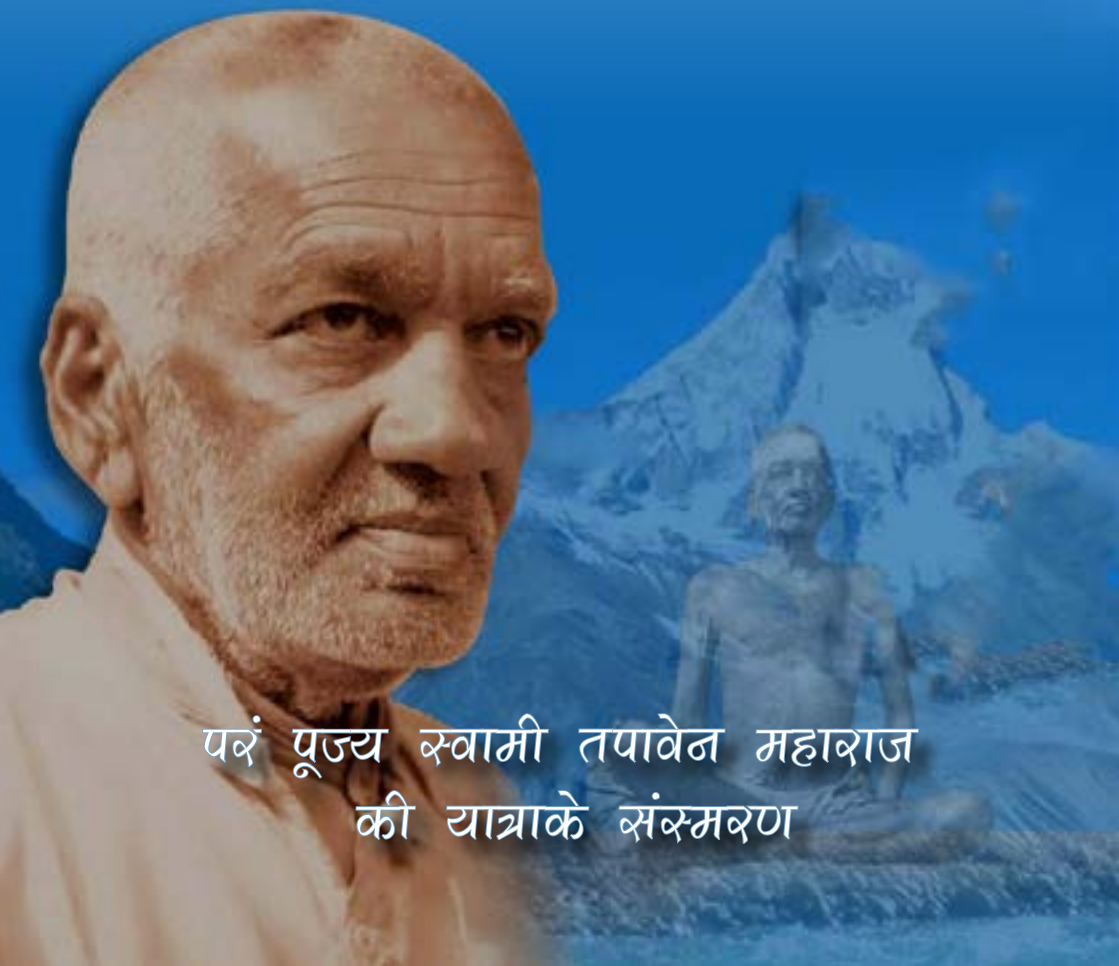

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

श्रद्धा और वैराग्य की मूर्ति नचिकेता का विस्मयकारी चरित्र तो प्रसिद्ध है जो मृत्युलोक में जाकर मृत्यु भगवान् से ब्रह्मविद्या सीखकर कृतकृत्य हो गये थे। उनकी अनन्य ज्ञानमहिमा तथा वैराग्य आदि सात्त्विक गुण वेद पुराणों में एक स्वर से गाये गये हैं। जब पुण्यात्मा नचिकेता के केवल नाम संकीर्तन से ही कोई देश पवित्र हो सकता है, तो साक्षात् उनके पादपद्म परागोंसे तीर्थ बने इन हिमालय प्रदेशों की पवित्रता का क्या कहना? ऐसा एक मोहनकाल अर्थात् एक सुवर्णयुग, प्राचीन भारत का था, जब कि जितेन्द्रिय, फल-मूलों पर जीवन बितानेवाले ऋषीश्वर हिमालय के एकांत वनांतरों में रहते

जीवन्मुक्त

हुए बाहरी दुनिया को भूलकर तत्त्वचिंतन में डूबे रहते थे। आध्यात्मिक दृष्टि से इस जमाने को तो उस काल की अपेक्षा बिलकुल फीका, एक पाषाणयुग या पाषण्डयुग ही मानना पड़ता है। जब तक अतीन्द्रिय, आध्यात्मिक तत्त्वों की अनुभूति साक्षात् नहीं होती, तब तक उन ऋषियों का मन तृप्त नही होता था। आध्यात्मिक तत्त्वों को वे श्रुतियों द्वारा या गुरुजनों द्वारा जानकर सन्तुष्ट नहीं होते थे, बल्कि उनके साक्षात् दर्शन के लिए वे लालायित और प्रयासशील रहते थे। उन्हीं के परिश्रम से भारत आध्यात्मिक भूमि के नाम से सारे संसार में प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं, वे अनगिनत ग्रन्थ भी जिनमें तत्त्व का अमूल्य निरूपण है, उनके अनुभव प्रधान चिंतन का ही सुपरिणाम है।

इस प्रकार विषयी जीवन को तृणवत् छोड़कर मन को अंतर्मुखी बना कर आन्तरिक तत्त्वों का अनुशीलन करनेवाले ऋषिपुंगवों का वह अतिपावन सत्ययुग आज भारतवर्ष से बिलकुल गायब हो गया है। आगे भी कभी भारत माता तो ऐसे ही पुत्रों जन्म देने का सौभाग्य मिलेगा

जीवन्मुक्त

या नहीं, यह सर्वज्ञ परमेश्वर ही जान सकते हैं। आज ज्यों ज्यों जीवन में विषय बहुलता बढ़ती जाती है, त्यों त्यों मन बहिर्मुखी होकर बाहरी दुनिया में ही घूमता फिरता है। वह अन्तर्लोक में विहार करके आंतरिक तत्त्वों को खोजने में रुचि नही रखता। बहिर्मुखी कर्मो में व्यस्त होकर जो बाहरी दुनिया में घूमते रहते हैं उनको सिर्फ बाहरी वस्तुओं का ही ज्ञान होता है, आंतरिक तत्त्वों की अनुभूति नहीं होती। अन्दर के आत्म तत्त्वो को देख लेना हो तो एकान्त स्थान में शांतिपूर्वक बैठकर अन्तर्मुखी चिंतन करने की आवश्यकता है। रजोवृत्ति में लीन आज के लोगों के लिए तो किसी को देखे बिना और किसी से संबंध किये बिना एकांत स्थान में एकाकी हो कर थोड़े दिनों तक जीवन बिताना भी असंभव हो जाता है। शांति, वैराग्य आदि सात्त्विक धर्मो की आज कोई महिमा नहीं मानी जाती। उनका जमाना बीत गया है। राग, द्वेष, लोभ, दम्भ अहंकार तथा इन्द्रियों को कभी विश्राम न देनेवाले मोहक रजोगुणों का ही यह युग है; अर्थात् रजोवृत्ति को छोड़ कर सात्त्विक कर्मो का आदर और प्रशंसा करनेवाले लोग आज बहुत कम है।

पौराणिक गाथा

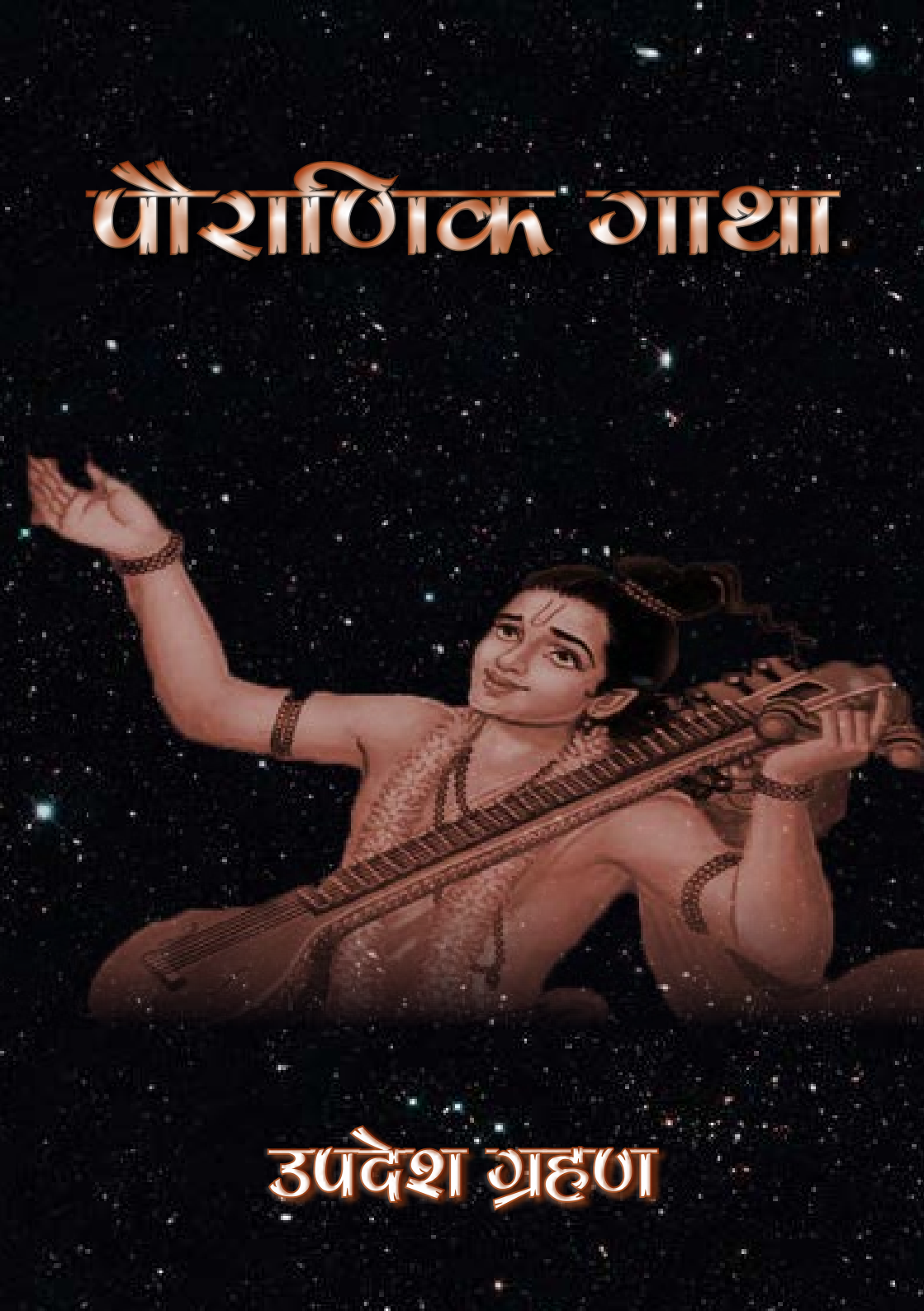

उपदेश ग्रहण

उपदेश ग्रहण

एक बार देवता, असुर और मनुष्य ये तीनों प्रजापति ब्रह्मा के पास जाकर उपदेश हेतु निवेदन करने लगें। प्रजापति ने उनका निवेदन स्वीकर किया और उन्हें अपने पास रहने की अनुमति प्रदान की। कुछ वर्षों सेवा और ब्रह्मचर्य का पालन करते रहें। तब एक दिन ब्रह्माजी ने उन्हें उपदेश हेतु अपने पास बुलाया।

सब से पहले देवताओं को 'द' अक्षर का उपदेश दिया। देवता स्वर्गादि के भोग में रत रहते है। वे भोगपरायण होने से उन्होंने उसका अर्थ ग्रहण किय 'दमन' अर्थात् इन्द्रिय संयम। वे उपदेश से धन्य हुए। प्रजापति ने उन्हें पूछा कि वे क्या समझें हैं? उस पर देवताओं ने कहा कि हमें भोगवृत्ति में संयम करना चाहिए। प्रजापति ने कहा, 'तथास्तु! पूर्णतः उचित है, उसीसे आपका कल्याण होगा।'

उपदेश ग्रहण

उसके उपरान्त दैत्यों को भी 'द' अक्षर का उपदेश दिया। वे भी संतुष्ट होकर जाने लगें। तब ब्रह्माजी ने पूछा कि, वे क्या समझे हैं? उस पर दैत्यों ने कहा कि हम बहुत हिंसक वृत्ति के है। अतः हमें दया करनी चाहिए। प्रजापति ने दैत्यों को भी यही कहा कि, उचित समझे हो, उसीसे तुम्हारा कल्याण होगा। मनुष्य को भी 'द' अक्षर का उपदेश दिया गया। मनुष्य ने भी उस पर गहराई से चिन्त किया और निष्कर्ष निकाला कि हम भविष्य की चिन्ता करके परिग्रह वृत्ति से युक्त रहते है, अतः हमें दान भी करना चाहिए। प्रजापति के पूछने पर उसने ऐसा ही बताया। प्रजापति ने कहा कि, यही तुम्हारे लिए उपदेश है। उसीसे तुम कल्याण को प्राप्त होंगे। एवं देवता, असुर व मनुष्य तीनों संतुष्ट होकर चले गएं।

यह दीखाता है कि एक ही उपदेश को सब अपने अपने संस्कार के अनुरूप ग्रहण करता है। उससे भी कल्याण की दिशा में यात्रा होती है। किन्तु गुरु का आशय समझने के लिए खुले मन से पूर्ण उपलब्धता के साथ ही श्रवण करना चाहिए।

विभूति दर्शन

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम समाचार

गीता जयन्ति उत्सव / दीप प्रज्ज्वलन

अग्रसेन धाम,
इन्दौर

आश्रम समाचार

गीता जयन्ति महोत्सव
अग्रसेन धाम

पूज्य गुरुजी
का स्वागत

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आश्रम समाचार

गीता जयन्ति महोत्सव
गीता भवन, इन्दौर

गीते भवद्वेषिणीम्

आश्रम समाचार

गीता भवन में प्रवचन

आश्रम समाचार

गीता भवन में प्रवचन

आश्रम समाचार

गीता जयन्ति पर्व

गीता पाठ

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी द्वारा
गंगेश्वर महादेव
अभिषेक

प्राकट्य दिन,
१५ दिसम्बर

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी से

आशीर्वाद प्राप्ति

तस्मै श्री गुरवे नमः।

आश्रम समाचार

तस्मै श्री गुरवे नमः ।

आश्रम समाचार

गंगेश्वर महादेव अभिषेक
हर्षवर्धन जाजू के द्वारा

आश्रम समाचार

जन्मदिन उत्सव
१५ दिसम्बर

आश्रम समाचार

जन्मदिन उत्सव, १५ दिसम्बर

आश्रम समाचार

पूज्य गुरुजी के चरणों में श्रद्धांजलि

आश्रम समाचार

प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारम्भ

आश्रम समाचार

शुभ जन्मदिनम्! सुमंगलम्!

आश्रम समाचार

भण्डारे का आयोजन

आश्रम समाचार

शिशिर का सुस्वागत

आश्रम समाचार

Bon fire

With hot dinner

आश्रम समाचार

शिशिर का सुस्वागत

आश्रम समाचार

मनोहर अग्रवाल के हसगुल्ले

आश्रम समाचार

पितरेश्वर हनुमान दर्शन

आश्रम समाचार

Astro Photography Session

In Bhopal

आश्रम समाचार

विभूति दर्शन

आश्रम समाचार

विभूति दर्शन

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

- ~ Atmabodha Pravachan
- ~ Sundar Kand Pravachan
- ~ Prerak Kahaniya
- ~ Ekshloki Pravachan
- ~ Sampoorna Gita Pravachan
- ~ Kathopanishad Pravachan
- ~ Shiva Mahimna Pravachan
- ~ Hanuman Chalisa

Audio Pravachans

- ~ Prerak Kahaniya
- ~ Sampoorna Gita Pravachan
- ~ Atmabodha Lessons

Vedanta Ashram YouTube Channel

Monthly eZines

Vedanta Sandesh ~ Jan '21

Vedanta Piyush ~ Dec '21

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

प्रेरक कहानियां
(ओनलाईन)

Facebook पर VDS group में नियमित प्रसारण
आश्रम महात्माओं के द्वारा

आत्मबोध (ओनलाईन)

Facebook पर VDS group में नियमित प्रसारण
पूज्य गुरुजी के द्वारा

---

१ से ६ मार्च २०२२
उपदेश सार शिविर

१ मार्च – महाशिवरात्री उत्सव
२ से ६ मार्च शिविर
पूज्य गुरुजी एवं
आश्रम के अन्य महात्माओं द्वारा

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Published by:
Vedanta Ashram, Indore

Editor:
Swamini Amitananda Saraswati